## विचार बिन्दु

**जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई देता वैसे ही दुष्ट को सौजन्य दिखाई नहीं देता। –स्वामी भजनानंद**

# पैकेज्ड खाद्य पदार्थ और एलोपैथिक दवाइओं पर लेबलिंग ( लिखित ) दोष को संज्ञान लेने वाला क्या कोई है?

मनुष्य शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक आहार और गुणवत्ता पूर्ण दवाइयां अत्यन्त आवश्यक हैं; देश में जैसे-जैसे टेक्नोलॉजी के अधिकाधिक उपयोग और उपभोक्तावाद के बढ़ते क्षेत्र से खाद्य और एलोपैथिक दवाई निर्माता उत्तरोत्तर उपभोक्ताओं के अहित में नित अधिक स्तर पर अपने द्वारा निर्मित उत्पादों में पैकेजिंग और उस पर लेबलिंग कारगुजारियां उपभोक्ता की आँख में धूल झोंकने के लिए करते दिख रहे हैं। दवाइयों की कीमतों में वृद्धि एक अलग मामला है जिस पर सरकार में बैठी सम्बंधित एजेंसी और उनके अधिकारीगण अपनी आँखें मूंदे यह सब होते देख रहे हैं। यह मेरा अपना दृष्टिकोण है कि हर तीन-चार महीने अंतराल से अधिकतम घोषित मूल्य अप्रत्याशित रूप से प्रत्येक नए बैच पर बढ़ा कर लिखा आता है। क्या इस मूल्य वृद्धि के लिए सरकार ने कोई निर्देश प्रसारित किये हुए हैं? फिर पैकेज पर बढ़ा हुआ अधिकतम मूल्य लिखा क्यों आता है? जिसका आशय है कि अमुक दवाई छपे हुए मूल्य से कम पर भी बेची जा सकती है। किन्तु यतार्थ में ऐसा होता नहीं है। अधिकांश दवा विक्रेता छपे हुए मूल्य पर ही दवा उपभोक्ता को बेचते हैं। जबकि वे अधिकतम छपे हुए मूल्य से सुविधापूर्वक 10 से 15 प्रतिशत कम पर दवा बेच सकते हैं। होलसेल डीलर्स न्यूनतम 30 प्रतिशत कम पर दवा रिटेलर्स को आपूर्ति करते हैं। फिर भी महत्वपूर्ण यह है दवाइयों की कीमते लागत मूल्य से कहीं अधिक मूल्य पर बेचीं जाती हैं।

खाद्य उत्पाद भी अब अधिक से अधिक पैकेज्ड करके ही बेचे जारहे हैं, परन्तु उन पर लेबलिंग अधिकांशतः त्रुटिपूर्ण होता है। आवश्यक जानकारी की ऐसी सूचना अधिक होती है जिसका उपभोक्ता से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं होता। निर्माण कर्ता और मार्केटिंग कर्ता का नाम प्रमुखता से लिखा मिलता है। लेबलिंग अथवा खाद्य में दोष होने पर इन दोनों में किसे अधिक उत्तरदायी ठहराया जायेगा? फ़सायी के डॉक्युमेंट्स पढ़ने पर इस बात का उल्लेख अथवा स्पष्टीकरण कहीं नहीं मिलता।

लेबलिंग के दोष में अक्षरों के आकार में असामान्यता और जरुरत से अधिक छोटा होना आम बात है। कोई उपभोक्ता उस विवरण को कई मामलों में बड़े दिखने वाले लेंस से भी नहीं पढ़ सकते । क्या फ़सायी इस बात से अनभिज्ञ है? क्या सभी उत्पादों के नवीन पॅकेजेड सैंपल के तौर पर फस्सायी भेजे जाते हैं ताकि उनकी गुणवत्ता उपभोक्ता की दृष्टि से आँकी जा सके। नित बढ़ते तकनिकी स्वरुप से बाजार में अनेक लेबलिंग दोष मिल जायेंगे। जो दोष सबसे अधिक दृष्टिगोचर होता है वह है अक्षरों की छपायी का, उदाहरण के लिए गहरे लाल अथवा हरे रंग की पृष्ठ भूमि पर काले अक्षरों में प्रिंट करना, ऐसा कभी पढ़ने में नहीं आ सकता । छपाई हमेशा कंट्रास्ट रंग पर ही हो। इसी प्रकार उपभोक्ता की सहूलियत के लिए सबसे पहले मूल्य, फिर निर्माण की तिथि, फिर बैच नंबर और बाद में एक्सपायरी तारीख का कंट्रास्ट जगह (सफ़ेद) पर काली स्याही से ऐसे अक्षरों में प्रिन्ट हो जिसे सुगमता से पढ़ा जा सके। अनेक बार निर्माण कर्ता या मार्केटिंग करनेवाला वजाय छापने के स्टाम्प (सील) लगा देते हैं जो कुछ समय पश्चात स्वतः मिट जाती है अथवा इतनी फीकी पड़ जाती है कि पढ़ने योग्य नहीं रहती।

**आश्चर्य होता है कि मानव के शरीर के जांच की रिपोर्ट सेंसर आधारित नवीनतम उपकरणों से शीघ्र उपलब्ध हो जाती है। वास्तव में सरकार ने अभी तक उचित विशेज्ञता वाले विशेषज्ञ भी वांछित संख्या में नियुक्त नहीं किये हैं, तो प्रशिक्षण और नमूनों का विश्लेषण कौन करेगा ? जब मेडिकल प्रयोगशालाओं और क्लिनिक्स पर ब्लड का सैंपल सुबह लेकर रिपोर्ट दोपहर 2 बजे तक रोगी को प्रदान की जा सकती है तो खाद्य विश्लेषण की रिपोर्ट मिलने में कई सप्ताह क्यों?**

ऐसे सभी दोष जो उपभोक्ता के लिए उपयुक्त नहीं होते, वे सभी कानूनन विधि सम्बत नहीं हैं। सरकार ने खाद्य अपमिश्रण से सम्बंधित लगभग छः विभागों को परिवर्तित कर केवल एक बड़ा विभाग (फस्सायी) बना दिया लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस बड़े विभाग में सभी कार्यों का आवंटन सही प्रकार से किया नहीं गया। पूर्व में खाद्य पदार्थों में अपमिश्रण की बड़ी समस्या थी। फस्सायी बनने से उसमे कमी तो कोई आयी नहीं बल्कि अचानक दुकानों से सैंपल लेने की व्यवस्था भी नाम मात्र की रह गई है। जो केवल कतिपय बड़े उत्सवों तक ही सीमित रह गई है। गत वर्ष सरकार ने मोबाइल प्रयोगशालाएं प्रदेश में आरम्भ करने की योजना केन्द्र की अनुमति से आरम्भ करने का लक्ष्य रखा था जिसके लिए लगभग 450 करोड़ रुपये का प्रावधान भी कर रखा था। मैंनें आज तक एक भी ऐसी मोबाइल प्रयोगशाला प्रदेश में संचालित होते नहीं देखी। चूँकि सरकार को बजट लैप्स न हो तो उसे शीघ्र खर्च करने की मंशा रहती है। हो सकता है मोबाइल वैन सरकार ने क्रय कर ली हों लेकिन वांछित स्टाफ की कमी के रहते अभी चालू नहीं की हों, अथवा कहीं अन्यंत्र काम आ रही हो? फिर भी सरकार कुछ और अधिक व्यय करना चाहे तो एक न्यायविद और साथ में संलग्न करे ताकि अपराध या दोष पर न्याय त्वरित हो सके और फ़िज़ूल कोर्ट के चक्कर न लगाने पड़े। इस प्रकार खाद्य, दवाइयां आदि पर अनावश्यक भागदौड़ और खर्चे से बचा जा सकेगा।

खाद्यों में अपमिश्रण की सीमा का कोई अंत नहीं है। कीट नाशक की मौजूदगी भी सब्जिओं और फलों में होती ही है जो कैंसरकारक और अन्य बीमारीओं को उत्पन्न करते हैं। सभी कीटनाशक विषैले होते हैं उनका दुष्प्रभाव होना लाजमी है। इन सभी कमिओं की पूर्ति निर्माणकर्ता उपभोक्ता को भ्रमित करने के लिए लेबलिंग भ्रामक कर देता है। औषधिओं और पैकेज्ड खाद्य के समुचित रासायनिक व जैविक विश्लेषण की व्यवस्था अभी तक विकसित नहीं हो सकी है। इस पर सम्बंधित विभाग द्वारा उपभोक्ताओं के लिए कोई प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी अभी तक नहीं की हुयी है। आश्चर्य होता है कि मानव के शरीर के जांच की रिपोर्ट सेंसर आधारित नवीनतम उपकरणों से शीघ्र उपलब्ध हो जाती है। उन उपकरणों को संचालित करने के लिए अभी हमारे विशेषज्ञ दक्ष नहीं हैं। क्योंकि उनेह पढ़ाई के दौरान ऐसे उपकरणों पर काम नहीं करवाया जाता। वास्तव में सरकार ने लगभग 10 से 15 वर्ष विभाग बनाकर अभी तक उचित विशेषग्यता वाले विशेषज्ञ भी वांछित संख्या में नियुक्त नहीं किये हैं, तो प्रशिक्षण और नमूनों का विश्लेषण कौन करेगा ? जब मेडिकल प्रयोगशालाओं और क्लिनिक्स पर ब्लड का सैंपल सुबह लेकर रिपोर्ट दोपहर 2 बजे तक रोगी को प्रदान की जा सकती है तो खाद्य विश्लेषण की रिपोर्ट मिलने में कई सप्ताह क्यों? फस्सायी सरकारी विभाग पर जनता के टैक्स से अर्जित धन के दुरूपयोग की यह एक बड़ी मिसाल है। यहाँ तक कि प्रयोगशालाएं भी नवीनतम उपकरणों से सज्जित नहीं हो सकी हैं और न ही वांछित योग्यता के ऐसे अनुभवी जो उन उपकरणों पर कार्य कर सकें। इस पूरे संधर्व में यह कहना कुछ हद तक सही होगा कि सरकार ने मानव जन सख्या में कमी करने की समुचित व्यवस्था येन केन प्रकारेण कर रखी है।

**–अतिथि सम्पादक,**
**प्रो. वीर बहादुर सिंह, खाद्य विज्ञ व् पूर्व कुलपति,**
**महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर**

## राशिफल शनिवार 7 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र दिन 12:34 तक, ब्रह्म योग रात्रि 11:16 तक, विष्टि करण सायं 5:38 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग 12:34 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:34 से सूर्योदय तक है। भद्रा सायं 5:38 तक रहेगी। आज महागणपति चतुरथी है। आज गणपति पूजन का सर्वश्रेष्ठ समय दिन 11:28 से दिन 1:40 तक है। आज जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) है। आज सौभाग्य चतुरथी है।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** शुभ 7:46 से 9:19 तक, चर 12:25 से 1:58 तक, लाभ-अमृत 1:58 से 5:04 तक।
**राहूकालः** 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:37

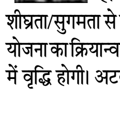

**मेष**
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

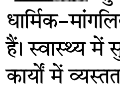

**वृष**
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

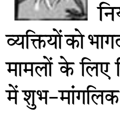

**मिथुन**
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

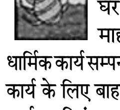

**कर्क**
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

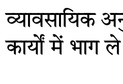

**सिंह**
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

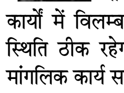

**कन्या**
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

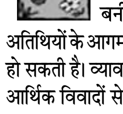

**तुला**
परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक विवादों से राहत मिल सकती है।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

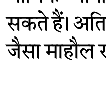

**धनु**
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

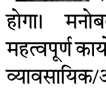

**मकर**
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

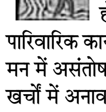

**कुंभ**
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यक्तिगत पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

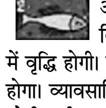

**मीन**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

# शौर्य, वीरता और धर्म के संस्थापक हैं गणपति

अंशु हर्ष

गणपति जी को हम प्रथम पूज्य मानते हैं और हर शुभ कार्य में उनकी पूजा-अर्चना सबसे पहले की जाती है। चाहे वह विवाह हो, घर या व्यावसायिक प्रतिष्ठान का उद्‌घाटन, या कोई अन्य मंगल कार्य, सबसे पहले गणपति जी की आराधना की जाती है। आमतौर पर गणेश जी की जो छवि हमारे मन में होती है, वह उन्हें विघ्नहर्ता, मंगलमूर्ति, माता पार्वती और भगवान शिव के पुत्र तथा कोमल हृदय बालक स्वरूप के रूप में प्रस्तुत करती है।

लेकिन गणपति केवल सौम्यता और बुद्धिमत्ता के प्रतीक नहीं हैं; वे वीरता और साहस के प्रतीक भी हैं। उन्होंने देवताओं की रक्षा के लिए दुरासद दैत्य का वध करके अपने साहस और वीरता का परिचय दिया। उनका यह स्वरूप हमें यह संदेश देता है कि जब बुराई का अंत करना आवश्यक हो, तब गणपति जी साक्षात वीर योद्धा के रूप में भी प्रकट होते हैं। इस प्रकार, वे न केवल संकटों को दूर करने वाले और मंगलकारी देवता हैं, बल्कि साहस, शक्ति, और वीरता के प्रतीक भी हैं।

हुआ यूँ कि दैत्य दुरासद ने कठोर तपस्या की, जिसके फलस्वरूप भगवान शिव और माँ पार्वती ने उसे यह वरदान दिया कि कोई भी देवता उसका वध नहीं कर सकेगा। इस वरदान के कारण दुरासद ने देवताओं के जीवन को तहस-नहस कर दिया। देवता अपने दैनिक कार्य और पूजा-अर्चना तक शांति से नहीं कर पा रहे थे।

इस संकट से मुक्ति पाने के लिए सभी देवता एकमत होकर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे और उनसे समाधान मांगा। ब्रह्मा जी ने देवताओं से कहा कि तीनों लोकों में ऐसा कोई देवता नहीं है जो इस दैत्य का वध कर सके। लेकिन यदि स्वयं देवाधिदेव, जिनकी आज्ञा से ब्रह्मा, विष्णु, और महेश की उत्पत्ति हुई है, जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त हैं और तीनों गुणों (सत्व, रजस, तमस) के स्वामी हैं, वे स्वयं माँ पार्वती के उदर से अवतरित हों, तो ही दुरासद दैत्य का वध संभव है। ब्रह्मा जी की बात सुनकर सभी देवता माँ पार्वती की स्तुति करने लगे। देवी प्रसन्न हुई और उन्होंने देवताओं से कहा, "आप सब गणनायक गणेश जी की आराधना करें। वे सम्पूर्ण सामर्थ्य से सम्पन्न हैं और समस्त जगत के पालनहार हैं।" देवताओं ने गणेश जी की आराधना की, तब उन्हें एक आकाशवाणी सुनाई दी, "आप लोग चिंता न करें, उस दुरासद दैत्य का वध मैं करूँगा।" यह सुनकर देवताओं को संदेह हुआ क्योंकि उन्होंने किसी को देखा नहीं। देवताओं ने माँ पार्वती से कहा, "भगवान शंकर अभी ध्यान में हैं, हम अपनी बात किससे कहें?"

तभी देवी पार्वती के मुख और नेत्रों से एक तेजस्वी प्रकाश प्रकट हुआ। उस प्रकाश में देवताओं ने विनायक की अत्यंत तेजयुक्त विशाल मूर्ति देखी। सभी देवताओं और देवी ने विनायक की आराधना की। माँ पार्वती ने अपना वाहन सिंह गणेश जी को प्रदान किया और उनका नामकरण 'वक्रतुण्ड' किया।

उन विशालकाय गणपति ने अपनी माता पार्वती को प्रणाम किया और कहा, मेरा अवतरण वैदिक धर्म और कर्म की स्थापना के लिए हुआ है, और मैं दुरासद दैत्य का वध करने के लिए तत्पर हूँ। इसके बाद, गणेश जी ने क्रोध से दैत्य के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। यह युद्ध अत्यंत रोमांचकारी और भीषण था, जिसमें कभी तलवारों से, कभी मल्ल युद्ध के द्वारा, और कभी विभिन्न आयुधों से प्रहार होते रहे। दोनों ओर से समान रूप से शक्तिशाली आक्रमण होते रहे और युद्ध दिनों तक चलता रहा।

दैत्य दुरासद भगवान शंकर का स्मरण करते हुए युद्ध करता रहा। कई दिन बीत जाने के बाद भी गणेश जी की शक्ति उतनी ही प्रबल बनी रही। यह देख दुरासद को शंकर जी का दिया हुआ वरदान याद आया, जिसमें कहा गया था कि केवल शक्ति से उत्पन्न कोई देवता ही उसे पराजित कर सकता है। उसे एहसास हुआ कि यह देवता अवश्य वही हैं। तब गणपति ने अपना विराट रूप धारण किया और दुरासद को पकड़ लिया। गणेश जी ने कहा, शंकर जी के वरदान के कारण तुम्हारी मृत्यु नहीं हो रही है, लेकिन अब तुम काशी नगरी में पर्वत के समान स्थिर और निश्छल होकर रहोगे। दुरासद ने गणेश जी से सानिध्य की याचना की और विनम्रता से निवेदन किया, हे देव, आप अपने चरण मेरे शीश पर रख दें।

गणपति जी ने दैत्य पर विजय प्राप्त की और अपना चरण उसके शीश पर रख दिया। इसी विजय के कारण गणेश जी 'एकपाद विनायक' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार, उन्होंने दुरासद दैत्य का अंत कर देवताओं और सम्पूर्ण ब्रह्मांड को संकट से मुक्त किया और धर्म की स्थापना की।

**–अंशु हर्ष,**
**( वरिष्ठ लेखक और साहित्यकार )**

# क्यों नहीं हो सकती महत्वपूर्ण पदों पर सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों की नियुक्ति?

राजेन्द्र भाणावत

राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य बाबूलाल कटारा पेपर लीक मामले में गिरफ्तार।

राजस्थान लोक सेवा आयोग का पूर्व सदस्य रामू रायका एवं उसके पुत्र एवं पुत्री पेपर लीक के आरोप में गिरफ्तार। रायका के दोनों पुत्र-पुत्री, सभी परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण हुए किंतु उन्हें सब इंस्पेक्टर की परीक्षा का प्रश्न पत्र अपने पिता से प्राप्त हुआ और ये बहुत ऊंची रैंक से परीक्षा में सफल हो गए। संवाददाताओं द्वारा उनसे पूछे गए अत्यंत सरल प्रश्नों का भी वे उत्तर नहीं दे पाए। अब तक 36 प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टरों को पुलिस ने पेपर लीक के आरोप में गिरफ्तार किया है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डीपी जारोली से रीट परीक्षा पेपर लीक मामले में गहन पूछताछ। रीट परीक्षा को रद्द किया गया।

नीट परीक्षा में एन टी ए ने मनमाने ढंग से बोनस अंक दिए। पहली बार नीट में 67 परीक्षार्थियों को शत प्रतिशत अंक प्राप्त। एन टी ए के अध्यक्ष वही व्यक्ति हैं, जिन पर, मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग एवं छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहते हुए भ्रष्टाचार के आरोप लगे किंतु उन्हें संघ लोक सेवा आयोग का सदस्य एवं अध्यक्ष बनाया गया। पूजा खेड़कर को आरक्षण के लिए अयोग्य होने के बावजूद भी संघ लोक सेवा आयोग द्वारा योग्य मानते हुए नियुक्ति देने की सिफारिश की गई। अब इसे निरस्त किया गया है।

सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच ने सेबी के अतिरिक्त, आई सी आई सीआई से भी प्रतिवर्ष लगभग चार करोड रुपए की राशि प्राप्त की। रोहतक आईआईएम के निदेशक धीरज शर्मा को स्नातक में निर्धारित प्रथम श्रेणी प्राप्त न होने पर भी निदेशक नियुक्त किया गया। पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट में भारत सरकार द्वारा यह माना गया कि धीरज शर्मा इस पद हेतु योग्य नहीं थे। इसके बावजूद उन्हें निदेशक पद से नहीं हटाया गया। न केवल यह, धीरज शर्मा को 5 वर्ष के लिए एक बार फिर निदेशक आई आई एम रोहतक के पद पर नियुक्त कर दिया। निर्वाचन आयोग द्वारा पहली बार कई दिनों तक चुनाव के आंकड़े जारी नहीं किए गए। ऐसा उन पर सरकार के दबाव में करने का आरोप लगा। निर्वाचन आयोग पर आदर्श आचार संहिता का पालन करने में भी पक्षपात का आरोप लगा। उत्तराखंड में ऐसे वन अधिकारी को राजाजी अभ्यारण्य का मुखिया बनाया गया, जिसके विरुद्ध सरकार के वन मंत्री एवं मुख्य सचिव ने स्पष्ट रूप से लिखा था। इन्हें अब उच्चतम न्यायालय के निर्देश के बाद इस पद से हटना पड़ा है।

उपरोक्त समाचारों को पढ़कर ऐसा लगता है कि देश में योग्य ईमानदार व्यक्तियों का नितांत अभाव है।इसीलिए सरकार को महत्वपूर्ण पदों पर भ्रष्ट और अयोग्य लोगों को लगाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। वास्तव में ऐसा है नहीं है कि 145 करोड़ के देश में प्रमुख संस्थाओं के मुखिया के रूप में नियुक्ति हेतु केंद्र एवं राज्य सरकारों को कोई उपयुक्त व्यक्ति न मिले। समस्या यह है कि सत्ताधारी दल, 'अपने लोगों' को इन पदों पर बिठाना चाहता है, ताकि ये इनसे मनमाने ढंग से अपनी इच्छा अनुसार कार्य करवा सकें। ऐसा करके वे देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ ही कर रहे हैं।

सभी सरकारें, चाहे वे किसी भी दल की क्यों न हों, सुशासन देने की बात करती रही हैं। यह सर्व विदित है कि सुशासन देने का कार्य अच्छी कार्यपालिका के माध्यम से ही संभव है। कार्यपालिका में विभिन्न प्रकार के विभाग अभिकरण, चयन आयोग आदि सम्मिलित हैं। कार्यपालिका के निम्न पद से लेकर उच्चतम पद पर पदस्थापित व्यक्ति, जिन सेवाओं से आते हैं, उनके लिए चयन का कार्य मुख्य रूप से संघ लोक सेवा आयोग एवं विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोगों के द्वारा किया जाता है।राजस्थान में यह कार्य राजस्थान लोक सेवा आयोग के द्वारा होता है। इसके माध्यम से राज्य की प्रशासनिक सेवा, लेखा सेवा, पुलिस सेवा, एवं अन्य राज्य सेवाओं के साथ ही कई विभागों में नियुक्ति हेतु चयन भी इन्हीं के द्वारा किया जाता है।

जहां लोक सेवा आयोग के द्वारा चयन, प्रतियोगी परीक्षाओं एवं साक्षात्कार के माध्यम से होता है, वहीं कई पद ऐसे भी होते हैं जहां पर सीधी नियुक्ति राज्य सरकारों अथवा केंद्र सरकार द्वारा अपने विवेक के अनुसार की जाती है, जैसे निर्वाचन आयुक्त, सीबीआई निदेशक, दूरदर्शन के महानिदेशक, सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष, सूचना आयोग के अध्यक्ष, निदेशक ई डी आदि, आदि। अब हम जरा यह देखने का प्रयास करें कि गत कुछ वर्षों में इन पदों पर नियुक्तियां क्या वास्तव में सर्वाधिक उपयुक्त और ईमानदार व्यक्तियों की, योग्यता के आधार पर की जा रही है ? इसका उत्तर निश्चित रूप से 'नहीं' है। उपरोक्त उद्धृत समाचार इसी की पुष्टि करते हैं कि नियुक्तियां अक्षम, अयोग्य और सत्ताधारी दल की चापलूसी करने वालों की हुई है।

राजस्थान में लोक सेवा आयोग में अध्यक्ष एवं अन्य पदों पर हाल ही के वर्षों में जिस प्रकार के व्यक्तियों की नियुक्ति की गई, उसका परिणाम है कि उसके दो पूर्व सदस्य बाबूलाल कटारा एवं रामूराम रायका जेल में बंद है। बाबूलाल कटारा को प्रश्न पत्र पता था। उसने रामू राम रायका को बताया और उसने अपने पुत्र और पुत्री को यह प्रश्न पत्र उपलब्ध करा दिया। प्रेस के प्रतिनिधियों ने जब इन पुत्र और पुत्री को अति साधारण प्रश्न पूछे तो वे उनका उत्तर भी नहीं दे पाए, किंतु सब इंस्पेक्टर की परीक्षा में उन्होंने उच्च अंक प्राप्त किए और चयनित हो गए। अब तक लगभग 40 प्रशिक्षणार्थी सब इंस्पेक्टरों को पुलिस की एस ओ जी ने पेपर लीक आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। कोई भी पेपर लीक, लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष भागीदारी के बिना संभव नहीं है। जब अध्यक्ष ही अक्षय और अयोग्य लोगों को बनाया जाएगा तो वह कैसे कार्य कुशलता एवं गोपनीयता बनाए रखने में सफल हो पाएंगे? राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा जितनी भी परीक्षाएं हाल ही में आयोजित की गई उन सब पर भी संदेह के बादल मंडरा रहें हैं। किसी भी संवैधानिक संस्था की विश्वसनीयता ही समाप्त हो जाए तो फिर उसके द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य पर संदेह उत्पन्न होना स्वाभाविक है और यह किसी भी व्यवस्था के लिए अत्यंत घातक है।

सुशासन की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है कि सरकार संघ लोक सेवा आयोग एवं राज्य लोक सेवा आयोग में निर्विवादित, पूर्ण सत्य निष्ठा वाले व्यक्तियों को नियुक्ति करे। ऐसा करते समय उन्हें अपने व्यक्तियों का ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं है।जब इन संस्थानों में योग्य व्यक्ति पद स्थापित होंगे तो वे किसी प्रकार के स्वार्थ प्रलोभन या दबाव में नहीं आएंगे और तब उनके द्वारा किया गया चयन भी श्रेष्ठ व्यक्तियों का होगी। कोई लोक सेवक यदि भ्रष्टाचार करता है तो एक ही बार कुछ काली कमाई करता है जिसके लिए भ्रष्टाचार निरोधक विभाग उसके विरुद्ध कार्रवाई करता है, किंतु जब चयन करने वाली एजेंसी ही भ्रष्ट और अयोग्य लोगों से भरी होंगी तो इनके माध्यम से श्रेष्ठ और योग्य व्यक्तियों का चयन लगभग असंभव है और जो चयन होंगे वे आगामी 30-35 साल तक जनता का शोषण ही करते रहेंगे। इसी प्रकार सरकार द्वारा जहां सीधी नियुक्ति की जाती है, वहां भी ऐसा करते समय उन्हें अपने क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठकर ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति करनी होगी जिनके बारे में किसी प्रकार की शंका न हो एवं जो अपने मेरुदंड को सीधा रखते हुए दबाव की परवाह किए बगैर अपना कार्य कर सकें। इस प्रकार की नियुक्तियां विशेष रूप से निर्वाचन आयोग, सीबीआई, एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट, सूचना आयोग, सेबी, रिजर्व बैंक के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आवश्यक है हाल ही में सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच का प्रकरण सामने आया है जिसकी नियुक्ति प्रधानमंत्री और गृहमंत्री की कैबिनेट की नियुक्ति समिति द्वारा की गई थी। माधवी पुरी पर आरोप है कि उन्होंने सेबी के साथ ही अन्य संस्थाओं से भी करोड़ों रुपए का वेतन अनियमित रूप से प्राप्त किया। अब इनके विरुद्ध सेबी के 500 अधिकारियों ने सरकार को लिखा है।

उच्च शिक्षण संस्थान और विश्वविद्यालय की नियुक्तियां भी इस बीमारी से अछूती नहीं हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति, यहां तक कि केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपतियों की नियुक्तियां भी विशुद्ध राजनीतिक आधार पर की जा रही हैं। यह सही है कि जो दल सत्ता में होगा वह अपने पसंद के लोगों को लगाएगा किंतु ऐसा करते समय इतना ध्यान तो अवश्य ही रखें कि चयनित व्यक्ति अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ हो, उसकी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति हो एवं उसकी सत्य निष्ठा पर किसी प्रकार का कोई संदेह न हो। विश्वविद्यालय के कुलपतियों के चयन के लिए जो सर्च कमेटी बनाई जाती है उसमें सुविख्यात और ईमानदार ख्याति प्राप्त लोगों को रखा जाना चाहिए। यदि सर्च कमेटी में ही गलत प्रकार के व्यक्ति आ गए, तो वह पैनल भी गलत और अयोग्य व्यक्तियों का ही प्रस्तावित करेंगे। हमने देखा है कि शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के कुलपति भ्रष्टाचारों के आरोपों से गिरे रहे हैं। सरकार को यह भी करना होगा कि यदि इनमें से कोई भ्रष्ट आचरण में लिप्त पाया जाए तो उसके विरुद्ध कार्रवाई करने में उसकी राजनैतिक विचारधारा का ध्यान रखे बिना उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दिलवाए। क्या सरकार इतना भी नहीं कर सकती? यदि नहीं, तो फिर उसे सुशासन की बात करनी ही नहीं चाहिए। योग्यता और ईमानदारी का मापदंड, मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक आदि महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति के लिए भी अपनाना चाहिए। उचित होगा कि, विभिन्न चयन प्रक्रियाओं के माध्यम से चयनित व्यक्तियों की नियुक्ति से पूर्व उनका पूरा विस्तृत बायोडाटा वेबसाइट पर डाल दिया जाए। यदि उन पर किसी भी प्रकार की किसी को कोई आपत्ति हो तो उसकी जांच की जाकर पूरी तरह निष्कलंक व्यक्तियों का ही चयन पारदर्शिता के साथ किया जाय।

कुल मिलाकर हम यही अपेक्षा करते हैं कि सरकार, चयन प्रक्रिया को पूरा पारदर्शी बनाए एवं यह सुनिश्चित करे कि अपने क्षुद्र स्वार्थ को परे रखकर, उपलब्ध व्यक्तियों में से श्रेष्ठतम व्यक्तियों का चयन करे। ऐसा करके ही, वह इन संस्थाओं की खोई हुई विश्वसनीयता को पुनःलौटा सकेगी।

**–राजेन्द्र भाणावत,**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# सीखने की निरंतरता बनी रहे यही व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक : गजेन्द्र सिंह

**■ गीतांजली यूनिवर्सिटी में कॉन्वोकेशन -2024 का आयोजन हुआ**

**गीतांजली यूनिवर्सिटी में कॉन्वोकेशन-2024 में केन्दीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, गीताजंलि के चैयरमेन जे. पी. अग्रवाल ने उपाधियां प्रदान की।**

**उदयपुर, (कासं)।** गीतांजली यूनिवर्सिटी द्वारा कॉन्वोकेशन-2024 का आयोजन गीतांजली यूनिवर्सिटी केनर्मदा देवी अग्रवाल ऑडिटोरियम में किया। कॉन्वोकेशन के मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि गजेन्द्र सिंह शेखावत केंद्रीय मंत्री, संस्कृति और पर्यटन (लोकसभा)भारत सरकार, गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन व गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल थे।

कॉन्वोकेशन के मुख्य अतिथि को प्रोसेशन द्वारा आदर-सत्कार से गीतांजली परिवार की नेतृत्व टीम में गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन जे.पी. अग्रवाल, वाईस चेयरमैन कपिल अग्रवाल, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, गीतांजली यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर डॉ एस.के लुहाडिया, रजिस्ट्रार मयूर रावल, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट व एकेडमिक काउन्सिल के सदस्यों ने नर्मदा देवी अग्रवाल ऑडिटोरियम में प्रवेश किया। इसके पश्चात् गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल ने कोन्वोकेशन का आगाज किया।

एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने कॉन्वोकेशन के लिए एकत्रित हुए सभी विद्यार्थियों व उनके माता-पिता का भी स्वागत किया। मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि गजेन्द्र सिंह शेखावत केंद्रीय मंत्री, चांसलर जे.पी. अग्रवाल द्वारा गीतांजली यूनिवर्सिटी के एम.बी.बी.एस, फार्मेसी, नर्सिंग, डेंटल, फिजियोथेरेपी के 43 गोल्ड मेडल्स एवं 844 ग्रेजुएट्स, पोस्ट ग्रेजुएट व पी.एच.डी विद्यर्थियों को डिग्रीयां प्रदान की गयी। 5 बेस्ट ग्रेजुएट्स को भी गोल्ड मेडल्स भी प्रदान किये। साथ ही मानद डाक्टरेड की उपाधि से एमेरिडस प्रोफेसर्स उपाधि पूर्व वाईस चांसलर डा.एफ.एस. मेहता, सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. ए.ए. सैफी को उनके चिकित्सा क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया। डॉ. एस.के लुहाडिया ने एनुअल रिपोर्ट पेश की। जे.पी. अग्रवाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आने वाला समय कृत्रिम बुद्धिमता का है। हमें स्वास्थ्य सेवा में सक्रिय सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। जे.पी अग्रवाल ने गीतांजली यूनिवर्सिटी व हॉस्पिटल की उपलब्धियों को भी साझा किया और साथ ही आने वाले समय में गीतांजली यूनिवर्सिटी को इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड पर ले जाने की बात की।

मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने उपस्थित सभी विद्यार्थियों व उनके माता-पिता को इस महत्वपूर्ण यात्रा के लिए बधाई दी। साथ ही उन्होंने गीतांजली यूनिवर्सिटी के सभी फैकल्टी को धन्यवाद प्रेक्षित किया और उनके द्वारा विद्यार्थियों को दिए गए मार्गदर्शन की वजह से आज उनको ये मुकाम हासिल हुआ है। उन्होंने कहा कि आज गीतांजली यूनिवर्सिटी मेडिकल व शिक्षा के क्षेत्र में पूरा भारतवर्ष में जाना पहचाना नाम है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमे भगवान को हेल्थकेयर प्रोफेशनल बनाने के लिए धन्यवाद करना चाहिए और सदा विनम्रता से रोगी के इलाज के प्रति सजग रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी भाव बना रहना अति आवश्यक है जिससे सीखने की निरन्तरता बनी रहती है और इसी से ही व्यक्ति का विकास होता है। वोट ऑफ थैंक्स रजिस्ट्रार मयूर रावल द्वारा प्रेक्षित करते हुए उन्होंने कहा कि सभी फैकल्टी मेंबर्स को उनके अथक प्रयासों और हर छात्र को उनके करियर के लिए मार्गदर्शन करने और एक अच्छा इंसान बनाने के लिए धन्यवाद किया और साथ ही कोन्वोकेशन- 2024 संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. उदीची कटारिया ने किया।